अरल सागर की असमय मृत्यु और भी जल्दी

कज़ाकस्तान और उजबेकिस्तान के बीच फैला अरल सागर तेज़ी से सूख रहा है। यह बात तो कई वर्षों से पता रही है मगर हाल ही मे किए गए एक सर्वेक्षण से पता चला है कि यह अनुमान से कहीं अधिक गति से गायब होता जा रहा है।

अरल सागर का सूखना 1960 के दशक में शुरू हो गया था। इसका प्रमुख कारण यह था और है कि इस सागर में पानी लाने वाली नदियों का पानी सिंचाई की नहरों में मोड़ दिया जाता है और इन नहरों का प्रबंधन ठीक से नहीं होता है। एक समय था जब इस सागर की साइज़ लगभग आसाम के बराबर (70 हज़ार वर्ग कि.मी.) हुआ करती थी मगर आज यह उसका मात्र एक चौथाई रह गया है। न सिर्फ इसका आकार घट गया है, यह दो भागों में बंट गया है: दक्षिणी अरल सागर और उत्तरी अरल सागर। इस पूरे सागर को बचाने की लागत इतनी ज़्यादा है कि मात्र उत्तरी अरल सागर को बचाने के प्रयास चल रहे हैं जो कि छोटा भाग है। इसमें से पानी का नुकसान रोकने के लिए कई बांध बनाए गए हैं।

दूसरी ओर दक्षिणी अरल को उसके हाल पर छोड़ दिया गया है। यह तेज़ी से सूख रहा है और साथ में पर्यावरण पर भारी प्रतिकूल असर डाल रहा है। सूखता हुआ समुद्र अपने पीछे विशाल खारी मिट्टी छोड़ रहा है। इसके अलावा पूरे इलाके की गर्मियां ज़्यादा गर्म और जाड़े ज़्यादा सर्द हो चले हैं। अब यहां सूखी धूल के तूफान उठते रहते हैं जो अपने साथ बीमारियां लेकर आते हैं। मत्स्य पालन उद्योग पूरी तरह चौपट हो गया है। सूखे हुए समुद्र की खारी रेत में पेड़ लगाने के व्यापक प्रयास किए जा रहे हैं ताकि कुछ प्रतिकूल प्रभावों में बचा जा सके।

पहली बार 1965 में एक सर्वेक्षण के बाद इसके सूखने की रफ्तार का अनुमान लगाया गया था। उस समय यह सागर समुद्र सतह से 57 मीटर ऊंचा था। यह कहा गया था कि वर्ष 2002 में यह घटकर मात्र 34 मीटर की ऊंचाई पर आ जाएगा और पानी उड़ जाने की वजह से इसका खारापन बढ़कर सामान्य समुद्री जल की अपेक्षा 1.6 गुना हो जाएगा। मगर अब शिरशोव समुद्र विज्ञान संस्थान (मास्को) के पीटर ज़ावियालोव के द्वारा किए गए सर्वेक्षण से चौंकाने वाले नतीजे मिले हैं।

ज़ावियालोव व उनके दल ने पाया कि अरल सागर समुद्र सतह से मात्र 30.5 मीटर ऊंचा रह गया है और इसका पानी साधारण समुद्री पानी से 2.4 गुना अधिक खारा है। यानी पूर्व के अनुमान से 10 प्रतिशत अधिक तेज़ी से अरल सागर लुप्त हो रहा है।

अन्य वैज्ञानिकों का कहना है कि ये आंकड़े कतई आश्चर्यजनक नहीं है क्योंकि पूर्व में किए गए सर्वेक्षण के